भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

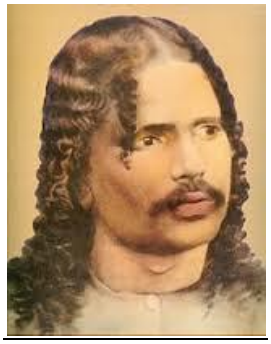

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आधुनिक हिंदी अर्थात खड़ी बोली में लिखे साहित्य के उन्नायक माने जाते हैं | उन्होंने मात्र 28 वर्ष की छोटी-सी जीवन अवधि में ही समाज, भाषा, साहित्य और संस्कृति के लिए क्रांतिकारी योगदान दिया | उनका जन्म 9 सितम्बर, 1850 में बनारस के अग्रवाल परिवार में हुआ था | वे औचारिक रूप से शिक्षा पूरी नहीं कर पाए | लेकिन स्वाध्याय से उच्चतम ज्ञान प्राप्त किया | उन्होंने अपने प्रयास से बांग्ला, मराठी, गुजराती, पंजाबी आदि लगभग 20-25 भाषा सीख ली थी | उन्हें राग-रागिनियों का अच्छा ज्ञान था | वे एक अच्छे नर्तक भी थे |

भारतेन्दु हिंदी नाटकों के जन्मदाता थे | उन्होंने 17 वर्ष की आयु में अपना पहला नाटक "विद्यासुन्दर" लिखा | नवीन नाट्य प्रयोग की दृष्टि से उनके लिखे गए दो नाटक "भारत दुर्दशा" और "अंधेर नगरी" उल्लेखनीय हैं | भारतेन्दु केवल हिंदी नाटकों के ही जन्मदाता नहीं थे, उन्होंने हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में भी सिद्धान्तनिष्ठ पत्रकारिता के युग का प्रवर्तन किया |

भारतेन्दु की सबसे बड़ी देन हिंदी गद्य निर्माता के रूप में थी | उन्होंने हिंदी गद्य को हिंदी साहित्य का रूप बनाया | वे मूलत: कवि थे | लेकिन उन्होंने दिखा दिया कि वह जितनी सशक्त व्रजभाषा की परम्परागत कृष्ण काव्यधारा की कविताएं लिखते थे, उतनी ही सशक्त हिंदी गद्य रचनाएं भी करते थे | हिंदी को विकसित करने के लिए भारतेन्दु ने अनेक पुस्तकों का अनुवाद किया और अनुवाद की आवश्यकता पर बल दिया | हिंदी प्रेम को उन्होंने राष्ट्र प्रेम से जोड़कर देखा | मातृ भाषा के विषय में उन्होंने कहा था -

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल |
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय का सूल |

भारतेन्दु की रचनाएं-

नाटक - विद्यासुंदर, वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवति, विषस्य विषमौषधम, सत्य हरिश्चंद्र, चंद्रावली, भारत दुर्दशा, भारत जननी, नीलदेवी, अंधेर नगरी, धनंजय विजय, मुद्राराक्षस, कर्पूर मंजरी, नीलदेवी, अंधेर नगरी चौपट राजा, रत्नावली |

काव्य संग्रह - भक्त सर्वस्व, प्रेम सरोवर, कार्तिक स्नान, बैसाख महात्म्य, प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, जैन कौतूहल, प्रेम फुलवाड़ी, सतसई-सिंगार, विनय-प्रेम-पचासा, वसन्त होली, विजयिनी-विजय-पताका आदि |

उपन्यास और कहानी - रामलीला, हम्मीर हठ, राजसिंह, सुलोचना, शीलवती, सावित्री-चरित्र |

इतिहास और पुरात्व - अग्रवालों की उत्पत्ति, दिल्ली दरबार दर्पण, कश्मीर-कुसुम, चरितावली |

निबंध और आख्यान - मदालसोपाख्यान, स्वर्ग में विचार-सभा, पांचवां पैगम्बर |

समाचार और पत्रिकाएं - कवि वचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगजीन |

स्त्री उपयोगी - बालबोधनी, हरिश्चंद्र चंद्रिका |

34 वर्ष की अल्पायु में 6 जनवरी, 1885 में उनका देहावसान हो गया |